कस्तूरी गंध

कस्तूरी गंध

(प्रीति श्री की मुक्त छन्द की
कविताओं एवं गीतों का संग्रह)

कस्तूरी गंध

प्रीति श्री

अयन प्रकाशन, नई दिल्ली

काव्य प्रेमियों
एवं
स्व० बहन मीरा को
सस्नेह
समर्पित—यह
'कस्तूरी-गंध'

—प्रीति श्री

मन की बात

काव्य-प्रेमियों को 'कस्तूरी गंध' समर्पित करते हुए एक अनकही पर भीतर तक महसूसी प्रसन्नता हो रही है।

कविता कोई जानकर नहीं लिखता परन्तु जहां तक मेरी सोच पहुंचती है कविता स्वयं मां सरस्वती की वाणी है। इसीलिए जब तक भीतर से 'सुरत' कुछ लिखवाने का प्रयास नहीं करती, कविता का जन्म नहीं होता।

ऐसा ही कुछ 'कस्तूरी गंध' में भी समाहित है। मन के दीप को समय-समय पर छू देने वाली अनजान लहरें कहीं गीतों में ढल गईं तो कहीं आकाश पर उगने वाले चांद, तारों, सूरज और क्षितिज को बाहु-पाश में समेट लेने की लालसा ने मुझे कविता दी। कभी बरसात का भीगा मौसम, हवाओं का छल, आस्थाओं का तीखापन और कभी भीतर-ही-भीतर टूटता हुआ कवि मन, समाज की घोर विषमताओं को देखकर कवि बन बैठा।

यूं मैं स्वयं कवयित्री होने का दावा भी नहीं करती। 'कस्तूरी गंध' तो मन की देहरी पर दस्तक देते हुए अनेक प्रश्न और मासूमियत भरी भावनाएं हैं जिसे सैलानी बादलों, फगुनहठी पतझर, मधुमास और जीवन के बहुआयामी समास के सम-विषम क्षणों में हमने, आपने एहसासा है।

कहानी संग्रह 'बीच की औरत' आम औरत की जिन्दगी को जीवन देने का प्रयास था, जिससे मुझे अनेक स्थापित कहानीकारों एवं आम पाठकों से बहुत सहयोग और स्नेह मिला है।

यह माना कि 'कस्तूरी गंध' में कुछ कमियां भी हो सकती हैं, परन्तु मनुष्य अपूर्ण है, अतः 'कस्तूरी गंध' भी आपसे अपना पूरा स्नेह और अपनापन चाहती है।

अपने प्रियजनों, पाठकों, कविता को सुनने-समझने और एहसासने का हृदय रखने वालो को यह कृति भेंट करते हुए ढेर-सी आर्द्रता मन के आकाश पर उपज आई है।

'कस्तूरी गध' भी आपका स्नेह पाने को आतुर है।

अन्त मे मै उन मित्रो, सम्बन्धियो और 'अपनो' को हार्दिक साधुवाद देती हूं जो 'कस्तूरी गध' मे कही भी, किसी भी रूप मे जुड़े हुए है।

धन्यवाद !

—डॉ० प्रीति श्रीवास्तव

अनुक्रम

प्रथम खण्ड : मुक्त छन्द

द्वितीय खण्ड : गीत

—o—

कस्तूरी गंध

प्रथम खण्ड

मुक्त छन्द

मेरे प्रिय भारत

ओ मेरे प्रिय भारत,
तुमसे मिल कर
बांटना चाहती हूं
तुम्हारा दुःख दर्द
तुम्हारी सोने-सी धरती
तुम्हारे सतरंगे आसमान
तुम्हारे देह की कस्तूरी गंध
समेटे हुए पवन
जिसे मैं अपने अंक पाश में
भर कर दुलारना चाहती हूं।
मेरे प्रिय भारत
तुम्हारी हरी मखमली घासों वाली चादर पर
करवटें लेकर
कोई नेह भरा गीत गुनगुनाना चाहती हूं,
तुम्हारे भाल पर खेलती
सूरज की सुनहरी रश्मियां
मैं अपने केशों में
रजनी गंधा के फूलों-सी
गूंथ लेना चाहती हूं,
तुम्हारे सघन अंधेरे
अपने आंचल में बांध
तुम्हें ज्योति-पुंज से
आलोकित कर देना चाहती हूं।
ओ मेरे प्रिय भारत,
तुम्हारे उत्तर की / प्रतीक्षा में
उघरे रहेंगे मेरे ये नेत्र
अनंत तक। □

नववर्ष

हे नवल वर्ष के नव-प्रभात
नव रश्मि, नवल गात
दिश-दिशा सूर्य चन्द्र
प्रमुदित सब खुले रन्ध्र
व्योम-सा खुला मन
इन्द्रधनुष रंग-रंगे तन
कलियां फूल पवन
सब फूले हर्षित जन
द्वन्द, द्वेष
घृणा क्लेश
छूटे सब,
भरे रश्मि
स्नेह-सिद्ध
सागर बन मन
जुड़े एक हो, विवेक हो
अनेक रश्मि, एक हो
जगमग कण-कण। □

पुनीत

तुम पुनीत प्रांजल
शीतल मलय समीर
तुम मेरे उर के स्पन्दन
तुम मेरे मन के क्षीर !
मेरे अनुपम पुनीत
दृगों से झांकता
स्नेह का सागर तुम्हारे
बांधता हर पल
मेरे उर के कगारे,
विटप वृक्ष से तुम
वल्लरी-सी मैं सहारे
नीलमणि से तुम
धरा पर पंख पसारे ।
मेरे अनुपम पुनीत
शुष्क जीवन की तलहटी में
मीन पाये जल कोष जैसे
चातकी को स्वाति की
एक बूंद हो वैसे,
तुम मेरी संवेदना के गीत हो
तुम मेरे मनमीत हो, संगीत हो
तुम मेरे अनुपम पुनीत हो ! □

सारांश

सांझ एकाकी उदास
बुनती रहती अपने ही में
जाने कितने अनुप्रास,
और मन
झिलमिलाती शाम की चूनर में
ढूंढ़ने लगता है
जीवन का सतरंगी स्वप्न
कभी गुनगुनाते झरनों में
कोई जीवन्त छन्द,
कभी हर शब्द का अर्थ
और, कभी लहरों का दर्प
और फिर—
शाम की गहराती बांहों में
खुद को सौंप, लौट आता है,
अपने उसी पुराने
अन्धेरों से भरे गलियारों में
जहां दंशित
होता तन-मन
अनगिन छिद्रों-रन्ध्रों से नुचा
उसी बेबाक उम्र में
तलाशता है / गीत नया
फिर सिर से कटे
खिलौने-सा
दंशित संदर्भों में,
ढूंढ़ लेता है, जीवन का
सारांश ! □

सूरज के लुटेरे

सूरज के लुटेरों ने
लूट लिया सारा सूरज
हमें मिले
घोर अन्धेरे,
हाथ बढ़ाते
ढूंढ़ रहे
सूरज के घेरे
निगल गए हैं अन्धेरे।
सूरज का सारा सोना
मुट्ठी भर धूप के लिए
दुबक कर कोने बैठी है
सोन चिरइया
आस लगाए
देख रही है
सूरज के दरवाज़े पर
कब
दस्तक देगा उजियारा ?
मेरा मन
गूलर के फूल-सा
अनमिला भीड़ में
अनखिला डाल में
बादलों की पर्तों में
सूरज के लुटेरों की
तलाश में भटक रहा
अन्तहीन। □

अकेलापन

सूने विशाल गृह में,
अकेलापन मेरे साथ,
स्मृतियों का कसैला, गंधीला गुच्छा
बिखेरता—कभी सुगन्ध, कभी दुर्गन्ध,
बीच-बीच में,
गौरैया के परों की फड़फड़ाहट
या दीवार घड़ी की टिक-टिक,
हवा भी चलती
स्थिरता को भेदती
मेरे सिरहाने आकर बैठती,
मेरे अकेलेपन पर तरस खाती
परदों को छूकर निकल जाती,
पड़ोस की रसोई से, आती बर्तनों की खट-खट
या फिर—
बच्चों का शोर,
अमरूद के वृक्ष पर लदे, पके अमरूदों को
पत्थर मार तोड़ने का प्रयास,
मेरा अकेलापन बहुत सुकून से
बीते पलों का सहभागी होता,
आम के पेड़ पर, रेंगती गिलहरी
या कुछ मोटी, ठिगनी चिड़ियों का
झुण्ड, चिचियाता
मेरा अकेलापन, मुझसे छिन जाता
बंट जाता, इन सब के साथ। ☐

सन्नाटों का शोर

दिशाओं से गहराते सन्नाटों का शोर
कान की भीतरी परतों पर
सुनी गई, भीड़ की दस्तक
दहकते पलाशों का रंग
घुल गया
झील के ठहरे हुए जल में,
हवा के फड़फड़ाते पंख
कैद हुए कमरों की मुट्ठियों में,
सड़कों पर विचरती
भद्दी आकृतियां
विद्रूप हंसी का दावानल
गुलमोहर के भीतर
रिसता हुआ दर्द,
वातायन से झांकती
कुहकुहाती सोन चिरइया
गवई के आम्रकुंज में
दुबकी कोयल की
निःशब्द कूक,
सब कुछ बुझी हुई, आग से
बिलबिलाते, कुकुरमुत्ते की ढेंपियों से उदास,
गर्भ से पनपता,
गहराता शोर
सन्नाटों का। ❑

वह आदमी मुक्त-छन्द

वह कमज़ोर आदमी
भीड़ में शामिल हो गया
सबकी देखा देखी
उसने भी उठा लिए हाथों में पत्थर,
और···
वह लोगों के मकानों के शीशे तोड़ने लगा,
भीड़ बढ़ती गई, अन्धेरा भी ।
अब उस आदमी के हाथ का पत्थर
सामने वाले मकान की खिड़की पर लगा
जहां से एक चीख आई
फिर एक विराट सन्नाटा,
यह चीख उस आदमी के घर की खिड़की से आई
जहां उसका बच्चा सो रहा था,
घने सन्नाटों में
चीख, बिजली-सी कोंधी
फिर चिर शान्त हो गई । □

घर आंगन महक उठा

तुम्हारे आने से
घर आंगन महक उठा।
सुधियों के सुप्त स्वर
वृत्ताकार होने लगे
अनचीन्हें चेहरे
हुए साकार सभी
कपोत के श्वेत पंखों-सी रात
छू गई मन वातायन।
प्रतीक्षित द्वार सजा
महकी पुरवाई
बन्दनवार लहक उठा
कूकती कोयल दूर अमराई।
सम्मोहित-सा तन
रग-रग सिहरन
मेरा मन पांखी आकुल
मनुहार से संवर उठा
तुम्हारे आने से
घर आंगन महक उठा। □

अनबूझा कुछ

जीवन की सांध्य-बेला में
मिले तुम सूर्य से मुझको
खिल उठे अनगिन सूरजमुखी
महक उठा मन वृन्दावन
मेरी सूखी टहनियों में
भर उठा स्नेह का स्वर
फिर से खिलने की ललक जगी
कितने ही नारंगी श्वेत हरसिंगार फूले
महुए की चटक, अमराइयों की महक-पगी
झूम उठे अनबूझे गीत
क्यों ?
मन ने क्या लिया जीत
कुछ बूझा, कुछ अनबूझा
इन्द्रधनुषी धुआं उठा
छा गया अन्तरिक्ष पट पर
जैसे कोई बादल अनछुआ। □

बीते पल

पलक बीतते ही
जाने क्यूं ?
दिन बीत जाते हैं
हर मोड़ पर मिलने वाला
कोई अपना बिछुड़ जाता है ।
बचपन के दिनों का सुनहरा सपना
इमलियों की चटखार
सखी से कही मन की बात
फिर—
अंजुरी भर धूप के
बिन मांगे वे पल
मन में पाले पोसे
कई इन्द्रधनुषी स्वप्न
यथार्थ की दहलीज पर
सफेद चादर में
बदल जाते हैं—
जो वक्त की मांग के साथ
छोटी होती जाती है
कभी पांव बाहर
तो कभी हाथ,
इसी अन्दर बाहर के खेल में
ढह जाता है
श्वेत संगमरमरी ताजमहल
और—
मात्र दिनों की याद
मूंदे हुए नयनों में

चलता चलचित्र
धीरे-धीरे
माटी की देह् की खोह् में विलीन
और अब
सूखी टह्नी-सा
कुछ डरा-डरा, कुछ सह्मा
सब कुछ भूलकर दूर
समुद्र की लह्रों में डूबने का सत्य। □

लिखने हैं मुझको कुछ अनबोले गीत

लिखने हैं मुझको कुछ अनबोले गीत
खेतों, खलिहानों, श्मशानों के गीत
मुट्ठी में बन्द हुए सूरज के गीत
चूल्हों से उठते धुएं के गीत
पत्थर पर लिखे जीवन के गीत !
ढोती है गारा-माटी तन सींच
दुखती रगों को लेती जो भींच
सड़कों गलियारों में, धोबी के पाटों में
झुग्गी-झोपड़ियों में, गाती जो गीत !
भोर से सांझ तलक
रोटी जुटाती है
बीनकर लकड़ी जो
सांझ घर को आती है,
भूखे बच्चों को जो पीटकर
सुलाती है,
बेबसी ही जिनके है
जीवन का मीत
तन पर जो डाले है
विवशता के चीर
बस्तियों में ढलते यौवन की पीर
चन्द सिक्कों में बेचे जो अपनी तकदीर।
लोलुपों के हाथों जो मिटती है
जलती है, होती सती है
फिर भी जो जुतती है
जीवन की गाड़ी में
ऐसे अनबोले पीरों के गीत। □

पीली पड़ गई है चांदनी

आज पीली पड़ गई है चांदनी
चांद से उतरी रुपहली चांदनी
वक्त की मार से बीमार
पीली पड़ गई है चांदनी।
रिसते जख्मों का ज़हर पी
बूढ़ी बीमार दिखती चांदनी
दर्द का अम्बार सीने में छुपाए
वक्त का जंजाल नयनों में बसाए
चांदी के चन्द सिक्कों के लिए
अब देह का व्यापार करती चांदनी।
पिघलती ही रही है
ज़िन्दगी का दर्द पीकर चांदनी
कई बार बेमौत मरती चांदनी
कभी सोने के पिंजरों में कैद होती
कभी अग्नि को होती समर्पित चांदनी
लोलुपों के लिए ज़िन्दगी का दहन करती चांदनी
ज़िन्दगी के लिए ही, ज़िन्दगी से मुक्त होती चांदनी। ☐

मेरा गांव

भारत की पावन माटी
सोंधी, सुन्दर, सुकुमार
खेतो में उगते, स्वर्ण भंडार
भारत की माटी केसर चन्दन के थार।

खलिहानों में महक उठती
पगी रसी कोपलों की गंध रचती
वासन्ती सपनों का इन्द्रधनुष
बुनते हैं हर स्त्री-पुरुष।

पनघट पर रुनझुन पायल
गोरी के माथे का टीका करता घायल
चूड़ियां खनकतीं, बालिग्रां महकतीं
पल-पल कोई कलिका
पुष्प बन चटकती।

गांवों के गलियारों में
कजरी सावन का गीत
कहीं दूर ढूंढ़ता मन
कोई बिछुड़ा मीत।

नीम तले की छांव
नन्हें हाथों में मुट्ठो भर
निमकौड़ियों का खज़ाना
मीत मेरे, मुझको भाता है
मेरा गांव। □

कारे मेघ

देखो घिर आए कारे मेघ
बरखा की बूंदें बरसीं
प्यासी धरती की श्वासों से
सोंधी बास उठी,
सावनियां दुलहनियां
ओढ़े हरियाली की चादर
बरखा की बूंदों की पायल पहने
रतनारे नयनों में, पी की प्रीत लिए
देखो घिर आए कारे मेघ !

सुधियों की झालर से
झांकते अनगिन प्रसून
प्यार भरे सम्बल को ढूंढ़ते भरमाए
देखो घिर आए कारे मेघ !

सुधियों के झरनों को,
झरने दो, मत रोको
बरखा की बूंदों से भीज उठा
तन-मन
मेघों की आंख-मिचौनी ने
सुख-दुःख दोनों लाए
देखो घिर आए कारे मेघ। □

होली का हुरंग

होली का हुरंग।
धरा पर उतर आया अनंग
चम्पई देह, इन्द्रधनुषी अंग
टेसू की चूनर पर
पिचकारी के रंग।

भीज गई कचनारी देह
कमल पंखुरी पर
सिमट गया
भर अंजुरी नेह।

रंग उठा तन-मन
फगुनहठी बयार
गूंजित बांसुरी, धुन सुन
मतवारी गोरी भरमाई
रसिया के रंग से शरमाई।

बरखा की बूंदों से
भीज उठा तन-मन
मेघों की आंख-मिचौली ने
सुख-दुःख दोनों लाए
देखो घिर आए कारे मेघ। ◻

कौन

जंगल, पहाड़, पवन
सब सहमे, डरे,
चुपचाप
कौन-सा खौफ है इन्हें,
आग उगलते हुए
स्टेनगन,
धुआंधार गोलियों की बौछार
बादलों पर छाया बारूदी धुआं,
बन्दूकों की आवाज़ों से
डरे, सहमे, फूल से मन
जिनकी भयग्रस्त आंखों से
झांकती है असुरक्षा।
मां से कर गए प्रश्न—
मां वो कौन है ?
जो बांट रहा है
तुम्हारा जिस्म,
बेच रहा है देश का
ईमान, धर्म और न्याय,
ध्वस्त कर रहा है
मैत्री के सूत्रों को,
कौन विषाक्त कर रहा है
हमारे फेफड़ों में
रिसती हवाएं,
कौन है जो पोंछ रहा है मांग के सिन्दूर
तोड़ रहा है सुहाग की चूड़ियां
उखाड़ रहा है केसर, गुलाब की क्यारियां

उगा रहा है बारूद की नागफनियां ?
मां, मुझे भी दे
एक बन्दूक,
मैं वतन के लुटेरों के ज़मीर पर,
असंख्य गोलियां दाग कर
अपने प्रश्न का हल मांगूंगा। □

मां

जननी, सृष्टि दायनी
पालती-पोसती जो हमें
जीवन जीने का अभ्यास कराती
वहन करती है जो
हमारे लिए पीड़ा, दायित्वों का बोझ
जो हमारे
भूख, प्यास, सुख-चैन के लिए
तत्पर है त्यागने को
अपना सर्वस्व।
मेरी मां
जीवन के चौथेपन में,
गुमसुम, अकेली, उदास
अनकही छटपटाहट से लैस
जिन्दगी के आखिरी सफर में,
अतृप्ता, ही त्याग देती है
अन्तिम श्वास कोष ! □

पत्थरों का शहनशाह

तपन भरी
जेठ की दुपहरिया
सड़क के किनारे
फुटपाथ पर
'वह' तोड़ता है पत्थर।

उसके बायें हाथ की अंगुलियों में,
हैं रबर के दस्तान
दाहिने हाथ का हथौड़ा
तेज़ी से
प्रहार करता है पत्थरों पर
और टुकड़े बिखर जाते हैं।

'वह'
उनकी ढेरियां लगाता है
यह ढेरियां, दुपहरिया के फूल-सी
और कभी नीले, पीले, गुलाबी, काले
गुलाब की पंखुरियों-सी, लगती हैं उसे।

सांझ ढलते ही
'वह'
संभालता है, अपनी झोली में
दस्तानें, हथौड़ी और पगार के पैसे,
राह में साहू की दुकान से
आटा, दाल, तेल, आलू और नमक के
थैले संभालता
खोली तक पहुंचता है

जहां आठ अदद आंखें
अपने-अपने कोटरों में से
उसके आने की राह जोहती हैं।

'उसे' देखकर,
इन कोटरों के जुगनुओं की आत्माओं में
प्रकाश फैल जाता है।

वह सामानों का थैला
'उसे' थमाकर
पास पड़ी खटिया पर बैठ,
एक लोटा पानी, गुड़ के साथ
डकारकर
आंखें मूंदकर
वह किसी
बेताज शहनशाह-सा
विश्रामरत हो जाता है। □

छटपटाता प्रजातंत्र

मकड़ियां अपने ही
बुने हुए जाल में
कैद हैं,
धूप, सूरज के घर में उदास,
खुशबू को छला है बार-बार
हवाओं ने,
बन्द मुट्ठियों से फिसली है रेत,
धर्म-स्थल बने राजनीति के खेल
भ्रष्टाचार, शोषण के दीमक
चाट गए देश को
आत्मा को !
'स्व' तंत्र में भी
हम हैं परतंत्र
खंडित होता हुआ
पंचतंत्र,
छटपटा रहा है
प्रजातंत्र
एक शुद्ध श्वास को। □

अपना-अपना अस्तित्व

धर्म की रामनामी चादर में
लिपटा,
राजनीति का खिलौना
सुन्दर, आकर्षक, लुभावना
उतना ही,
काजल की कोठरी में डूबा
लिपा-पुता
धर्म-राजनीति
राजनीति धर्म
शक्कर और जल के
मिश्रण जैसा,
अन्वेषणों से
निथारे ऐसा प्रयोग
जिससे राजनीति, धर्म
अलग-विलग होकर
एक-दूसरे से
बहुत दूर,
अपने-अपने
अस्तित्व में जिएं। □

परिभाषाएं

प्रजातंत्र ने पहन लिया
सामन्ती लिबास
और
सत्य, काले धन-सा कैद
तहखानों में,
झूठ के खरगोशी पांव
निरन्तर भागते हुए
पर्वत-शीर्षों, वृक्ष की फुनगियों तक
सभ्यताएं, संस्कृति, आचार
कूड़े के ढेर से
फेंक दिए गए,
'डस्ट बीन्स' में।
बदलते मौसम-सी
बदलती परिभाषाएं
और हम,
सभ्यता की ओर अग्रसर
आदमखोर-यंत्र से
इन परिभाषाओं की
तमिस्रा में, तलाशें
एक नाव ! □

दो हाथ

श्रम सीकरों से सने दो हाथ
पत्थर तोड़ते, बोझ उठाते
छानते, पीसते, कूटते, दो हाथ
बुहारते, संवारते, दुलारते
धोते, पकाते, सुखाते दो हाथ,
इन दो हाथों में
नहीं रची कभी मेंहदी
सोहते हैं जिनमें—कुदाल / हल / बीज / उपले
और ओखली,
वक्त से पहले
बिना पढ़ी गई किताब-सी देह पर
उभरती शिकनें,
मांस के नाम पर पेट से उगती हड्डियां
जो बोते हैं बंजर में धानी चादर की फसल
दो हाथ जो बटोरते हैं, हीरे / मोती
तुम्हारे लिए, हमारे लिए
खुरदुरे / सख्त / अतृप्त / अभिशप्त / उदास
सांसों के आखिरी सफर में
खुले ही रह गए / याचक से। □

पीला पत्ता

अभी-अभी पेड़ से
गिरा एक पीला पत्ता
बेबस, कमज़ोर, लाचार
हवा उड़ा ले गई जिसे
दूर तलक
और···
हवा के थपेड़ों से
त्रस्त, आहत, डरा, सहमा,
तभी पास बहती नदी ने
उसे अंक में उठा
सहलाया, दुलराया
और
ले गई तटबन्ध तक। □

कस्तूरी गंध

द्वितीय खण्ड

गीत

सीपियों में बन्द कर लूं

सीपियों में बन्द कर लूं
प्यार के मोती तुम्हारे
चांदनी में कैद कर लूं
आस्था के गीत सारे॥

व्योम के फैलाव को ज्यों
बांध लेता, सांझ का पल
मैं तुम्हारी ज्योति छवि को
पर्वतों में ढूंढ़ लूं चल।
चन्दनी सांसों के पल से
गन्ध लेता है पवन भी
मैं तुम्हारे गन्ध को
निर्झरों में कैद कर लूं।
सीपियों में बन्द कर लूं
प्यार के मोती तुम्हारे॥

लालिमा तेरे कपोलों से
चुराता है गगन भी
मैं तुम्हारी लालिमा को
सागरों में कैद कर लूं।
इन घटाओं ने चुराए
नयन से अंजन तुम्हारे
मैं नयन की कालिमा को
बादलों में ढूंढ़ लूं चल
सीपियों में बन्द कर लूं
प्यार के मोती तुम्हारे॥ □

मोह पाश

सिन्दूरी मोह पाश जागेगा
जब तुम दुलराओगे मुझको।

जीने की आस जगेगी
आंगन में महकेंगे हरसिंगार
मनपांखी चहक-चहक गाएगा
सिन्दूरी……

नयनों में स्वप्न सजेंगे
शब्दों में गीत रचेंगे
वृन्दावन महक-महक जाएगा
सिन्दूरी……

चन्दन अक्षत अबीर लगेंगे
तुलसी चौरे पर दीप जलेंगे
तन निर्झर छहर-छहर जाएगा
सिन्दूरी मोह पाश जागेगा,
जब तुम दुलराओगे हमको। □

ढूंढ़ लिया तुम्हें प्रिये

ढूंढ़ लिया तुम्हें प्रिये
पात - पात सुमन - सुमन
बिम्ब भी नहीं मिला
चिह्न भी नहीं मिला
दृष्टि रही प्यासी ही चातक-सी
मिली नहीं स्वाति बूंदें।

चांदनी की चादर में
रोशनी के आंगन में
झरनों के कगारों में
सागर की लहरों में
दृष्टि पंथ पथराई

रात्रि भी गहराई।
शून्य दृष्टि थकी-थकी
स्मृतियां बुझी - बुझी
सावन के थके मेघ
जैसे हो बरस गए
नयन कोर तरस गए
ढूंढ़ लिया तुम्हें प्रिये।

बोझिल है गात - गात
सुधियों में कटी रात
अलसाए नयन नयन
सिन्दूरी सन्ध्या भी
कबकी गहरा गई

बरसाती झोंकों ने
थिरकन - सी ताल भरी
श्वासों में पिघल रही
ठंडी बयार है,
आए नहीं क्यूं प्रिये
प्रश्न भी उदास है।
ढूंढ़ लिया तुम्हें प्रिये
पात - पात सुमन - सुमन। □

धूप बनो

सुबह की धूप बनो
बरसो घर आंगन
गंध भरे फूल बनो
महकाओ मन कानन
जीवन है, कल-कल निर्झर
भर लो आशा की गागर
मुसकाओ तुम गगन उपवन
बहो मलय समीर बन
बांटों अमिय स्नेह
जन, जन □

कब से गाती गीत तुम्हारे

कब से गाती गीत तुम्हारे
मेरे साजन तुम नहीं आए।

जीवन का हर पल सूना है
उस पर तेरा दुख दूना है
मुख से निकसत नाहीं बैना
बैरन लगती चांदनी रैना
वैरी ऋतु भी खूब सताए
बीती सुधिया याद दिलाए
प्रातः न भाए, रैन न भाए
साजन तुम बिन चैन न आए।

सावन की ये मीठी झड़ियां
पीड़ित करतीं मुझ बिरहन को
पल-पल तेरी पुलक हमारे
सूने मन को और सताए
कब से गाती गीत तुम्हारे
मेरे साजन तुम नहीं आए। □

सावनी गीत

बदरा घिर आए सजन
तोसे कब होगा मिलन
ठंडी-ठंडी बदरा की बरसें बुंदियां।

उतना ही तरसे रे मन
झूमे पुरवइया सजन
बोले कोयलिया सजन
हरी-हरी धरती ने ओढ़ी चुनरिया।

मोरा भी तरसे रे मन
खिल उठा मोगरा सजन
झूमे पापी भ्रमरा सजन
सूनी-सूनी लागे मोरी अंगनियां।

मिलने की आस सजन
अबकी जो आए सजन
प्रीति जगाए सजन
मन मोरा लेने लगा अंगड़इयां।
जाने न दूंगी सजन
बदरा घिर आए सजन। □

पिया नहीं आए

घिर आई कारी बदरिया
कि पिया नहीं आए।

चमके बिजुरिया
धड़केला छतियां
फड़केला दाहिना अलंगवा
कि पिया नहीं आए।

टप-टप बुन्दिया
बरसे अंगनवा
अखियन से बहेला कजरवा
कि पिया नहीं आए।

सात रंग की,
मोरी चुनरिया
भींजि गइले, पड़ि गइल दगियां
कि पिया नहीं आए।

आपु नहीं आए
न चिट्ठिया पठाएं
सोचि-सोचि कसकेला जियरा
कि पिया नहीं आए।

घिर आई कारी बदरिया
कि पिया नहीं आए। □

सावन आया तुम नहीं आए

सावन आया तुम नहीं आए
प्यासी उमरिया बीत न जाए
कारी कोयरिया ताना मारे
बरखा की बुंदियां बरसन लागे
काहे को तुम नहीं आए हमारे
सावन आया तुम नहीं आए।

अमवा के डरियन झूलन डारे
झूलन लागे सखियां पी को पुकारे
सब सखियन के पी घर आए
काहे को तुम नहीं आए हमारे
नैन हुए रो-रो रतनारे
सावन आया तुम नहीं आए।

चमके बिजुरिया अंगना दुआरे
अखियन से बरसे बदरा हमारे
जितना भुलाऊं तू याद आए
दरस को तरसे नयना हमारे
सावन की बुंदियां लागे अंगारे
सावन आया तुम नहीं आए। □

गीत को स्वर दो

गीत को स्वर दो मेरे प्रिय तुम,
रागिनी मेरी गुम हो गई है।

रात कटती नहीं बात बढ़ती नहीं
बात नदियों ने पूछी घात सखियों ने पूछी
चांद की चांदनी जल रही है
मन ही मन मानिनी जल रही है।

नेह की दीप बाती कहीं जल रही है
लौ दो इनको प्रिये, लौ दो इनको—
रोशनी इनकी गुम हो गई है
गीत को स्वर दो मेरे प्रिये तुम।

आस पलती रही, उम्र ढलती रही
ज़िन्दगी यूं ही पल-पल बिखरती रही
आज इतना जलाओ हृदय को प्रिये
रोशनी भर उठे व्योम तक में प्रिये।
गीत को स्वर दो मेरे प्रिये। □

व्यथित हृदय

व्यथित हो हृदय का
अगर हर एक कोना
सजेगा तभी गीत
सुन्दर सलोना

तभी ताप बदलेगा
शीतल मलय में
तभी कंटकों में
खिलेगा सवेरा

तृषा ही तृषा हो
तुम्हारे हृदय में
विहंसता चमन हो
नयन ही नयन में

दुखों की घटाएं भी
तुम पर जो छाएं
बन के तुम बदली
बरस जावो पगली

नये प्रात की तुम
नई रोशनी में
डुबो दो जगत को
नई चांदनी में,

लुटा दो गगन में
सुखों की सुराही
मिटा दो हर एक मन की
घुटती उदासी
व्यथित हो हृदय का।

याद हमारी आए

भूले भटके से जब तुमको
याद हमारी आए,
अमराई की छांव सुहानी
यादें बनकर छाए ।।
भूले……

दूर गगन में चमके बिजुरी
और बदरा लहराए
पवन गीत छेड़े मनुहारी
चन्दा प्यार जताए ।।
भूले……

कोयल कू-कू गीत सुनाए
और नभ में तारे मुस्काए
आंचल में तब चपल चांदनी
खुशियां भर-भरकर लाए ।।
भूले भटके से जब तुमको
याद हमारी आए । □

शाम ढले

शाम ढले
ओ शाम ढले
अमवा की छांव तले शाम ढले।

रात बनी दुलहनिया
पुरइन के पात हिले
पात हिले
गात बसी निंदिया
कहक उठे
शाम ढले।

बातों के संग-संग
साजन के अंग-अंग
बजती है बांसुरिया,
इन्द्रधनुष रंग-रंग
प्रियतम मन आन बसे।
औ शाम ढले। □

तुम मेरे

तुम मेरे मन की बगिया के
खिले सुमन से हो।

तुम विहंग के कलरव में,
तुम अम्बर की मिलाभा में,
तुम महक फागुनी हो।

तुम सावन की हरियाली में,
तुम वृक्षों की हर डाली में,
तुम पवन चन्दनी हो।

तुम रसे-बसे हो रन्ध्रों में,
तुम छाए हो संबन्धों में,
तुम गीतों के हर छन्दों में,
तुम अगम रागिनी हो।
तुम मेरे मन की बगिया के,
खिले सुमन से हो। □

गांव को तुम लौट कर जब आओगे

जब कभी तुम लौट कर प्रिय
गांव मेरे आआगे,
चिर प्रतीक्षित देहरी पर
प्राण मेरे पाओगे।

रात्रि के पिछले प्रहर तक
तंग झरनों के किनारे
छुप छुपा कर झुरमुटों में
जुगनुओं से खेल करना,
नीम की छइयां तले
निमकौड़ियों का वो खज़ाना
आम की अमराइयों में
गन्ध परिमल की चुराना,
दिन वही वैसे के वैसे
ढूंढते हैं पल उजाले
जब कभी तुम लौट कर प्रिय
गांव मेरे आओगे।

गांव की माटी में अब भी
गन्ध है तेरे बदन की
फूलों के चेहरे पे टांकी
नेह की पावन कहानी
जब कभी तुम लौट कर प्रिय
गांव मेरे आओगे
चिर प्रतीक्षित देहरी पर
प्राण मेरे पाओगे।

चन्दनी सांसों की सौगन्ध
लौट आएंगी बहारें
फिर वही मधुमास होगा
और निर्झर के कगारे
है मुझे विश्वास तुम
लौट एक दिन आओगे।
जब कभी भी लौट कर प्रिय
गांव मेरे आओगे
चिर प्रतीक्षित देहरी पर
प्राण मेरे पाओगे। □

केसर के गांव में

केसर के गांव में,
आओ चलो गोरी
मिलजुल कर खेलें हम
फाग चलो गोरी।

रंग उड़े धानी चुनरिया गुलाबी
छींट का है लहंगा कंचुकिया गुलाबी
नथियां में, नथियां में लाल मोतियन की है डोरी
केसर के गांव में आओ चलो गोरी।

फाग खेले साजन और फाग खेले सजनी
दिन लागे प्यारे, और प्यारी लागे रजनी
केसरिया, केसरिया रंग भई निंदिया हमारी
केसर के गांव में आओ चलो गोरी।

नयनन में प्रीत का रंग है गुलाबी
यौवन रंग भीज गई देहिया हमारी
प्रीत रंग, प्रीत रंग सींच गई चुनरी हमारी
केसर के गांव में आओ चलो गोरी।

फूल उठे गुलमोहर, अमलतास झूमे
फूल-फूल कली-कली भ्रमरा है झूमे
चम्पा के, चम्पा के अंग संग
भींज रही गोरी। □

चांद बढ़ता गया

चांद बढ़ता गया
उम्र ढलती गई
दिन उजाले बने
रात कटती गई।

चांदनी चांद की गन्ध भरती रही
बन्द कमरों में सांसें पिघलती रहीं।
रातें सूनी लगीं
दर्द बढ़ने लगा
जंगलों में उदासी भटकने लगी
चांद बढ़ता गया
उम्र ढलती गई।

सोने के पींजरों में
रहा कैद मन
बन के पांखी गगन में
विचरने लगा
मन की बगिया में कलियां विहंसने लगीं
चांद बढ़ता गया
उम्र ढलती गई। □

वैरागी गीत

वैरागी अब गीत हो गए,
भूले बिसरे मीत हो गए,
छलना भरी झील में झांका,
स्वप्न घनेरी नींद सो गए।

जितने चेहरे पढ़ना चाहा
जिसको अपना कहना चाहा
जितना हम डूबे उतराए
उतने ही तैराक हो गए।

तटबन्धों के बीच ये लहरें
टूट - टूटकर बनती लहरें
हम तो सावन की आशा में
मरुथल की एक झील हो गए।

एक आंख से झरती शबनम
दूजे आंख आंसू का परचम
इतनी बढ़ी दर्द की नदिया
धीरे-धीरे जलधि हो गए।
वैरागी अब गीत हो गए। □

खोए हुए संदर्भ

मन के सब संदर्भ खो गए
लगता जीवन अर्थ खो गए,
पास भी आकर तुम जाने क्यों
अब उतनी ही दूर हो गए।

टूट गए सतरंगी सपने
बिछुड़ गए जो कल थे अपने
जीवन की प्रस्तर राहों में
मीत बने थे जो थे अपने।

तोड़ दिए सारे अनुबंधन
छोड़ दिए सारे ही चिन्तन
सिर्फ तुम्हारे लिए मीत अब
विष का करते हम आचमन।

एक साथ एक पगडंडी पर
थामे हाथ तुम्हारा सत्वर
बढ़ते गए चरण बस आगे
चाहे शिला मिली या प्रस्तर।

तुम मुझको निर्मोही लगते
और अधिक विद्रोही लगते
प्यार नहीं कोई अनुबन्धन
यह जन्मों का सजल निमंत्रण।

सुधियों के गहरे सागर में
मीत बने तुम मन गागर में
भ्रमरा रूप तुम्हारा लगता
फलों, कलियों के मन रमता। ☐

आओ ऐसे चित्र बनाएं

आओ ऐसे चित्र बनाएं
प्रेम प्रीत के रंग सजाएं
इस जीवन के कैनवास पर
हंसते गाते चित्र बनाएं।

आंगन-आंगन फूल खिले हों
देहरी-देहरी हृदय मिले हों
जुगनू वाली ज्योति समो कर
आंगन देहरी धूप सजाएं।

जन-जन के मन में हों सपने
तन-तन सजे सुनहरे गहने
हर मन वृन्दावन-सा लागे
मधुर बांसुरी श्याम सुनाएं।

धर्म एक हो, जाति एक हो
गीत बहुत हो, राग एक हो
फूल बहुत हों, गंध एक हो
ऐसे सुन्दर चमन सजाएं।

जीवन बहुत भला लगता है
पर-दुःख जब अपना लगता है
नागफनी खुद आंचल लेकर
सुख दूजे को हम पहुंचाएं। □

हमको प्रतिपल चलना होगा

हमको प्रतिपल चलना होगा
फूल मिलें या पथ शूलों के
पतझर मिले या वन फूलों के
हमको प्रतिपल चलना होगा।

रोज प्रातः सूरज की लाली
घनी छांव वह बरगद वाली
लक्ष्य बनाकर शिखर बिन्दु को
हमको प्रतिपल चलना होगा।

सरिता में चलती ज्यों नावें
तूफानों में बढ़ती ज्यों नावें
उपवन भी जैसे पतझर में
खिलते रहते कर्म गगन में।

जितना घना अंधेरा होगा
उतना दीप जलाना होगा
दर्द घनेरा जितना होगा
उतना श्रेष्ठ सवेरा होगा।

मत घबराना सूनेपन से
मत घबराना रीतेपन से
मत देखो हम कितना जीए
यह देखो हम कैसे जीए।

प्रस्तर कभी पिघलते हैं क्या ?
घट रीते ही रहते हैं क्या ?
दर्द सयाना हो जाए तो
बादल बनकर बरसना होगा।

लाक्षागृह में रहते हैं हम
जलने से कब डरते हैं हम
उम्र हज़ारों जी लेने से
जीवन नहीं जिए जाते हैं
यह जीवन जो दुर्लभ पाया
उसको अर्पण करना होगा।

पाप सदा ही पुसा पला है
पुण्य सदा ही गया छला है
पाप, पुण्य के चक्रव्यूह से
हमको ऊपर उठना होगा
रोज़ सुबह सुकरात के जैसे
विष का प्याला पीना होगा।
हमको प्रतिपल चलना होगा। □

तुम राही हो

तुम राही हो
बढ़ते जाना
मग में आए
तूफानों से,
अंतिम सांसों
तक भी लड़ना ।
राहें चिकनी हों
या अवरोधदार
राहें गीली हों
या फैले हों
कांकर पाथर
मरघट-सी रातें हों या,
मदमाते उजियारे दिन हों ।
तन में छाए हुए जलन को
मन में भरे हुए गरल को
सत्कर्मों के मीठेपन से
अमृतमय कर लेना ।
व्यथा बनेगी भोर फागुनी
राहें उजियारी परती भी
बरस सजेगी महक सावनी
उर में तब भर जाएगी
चन्दन वन की मलय रागिनी । □

बेखबर मौसम

यह मौसम बेखबर है
कहीं धूप है कहीं छांव है
कहीं फूल हैं कहीं खार है

ये हरियाली में सूनापन
ये भीड़ में भी अकेलापन
ये मेलों में भी तनहाई
ये बस्ती में भी वीरानी
ये जंगल में है हैरानी

ये कांटों के दरख्तों पर
अजीबोगरीब दर्द के साए
ये फूलों पर लगे पहरे
बुतों से ये लगे चेहरे

कहीं से आ चुरा लूं मैं
उजाले दिन, हसीं रातें
मिटा दूं दूर तक फैली
इन पलकों की उदासी में। □

चांदनी की उदासी

आज कितनी उदास लगी चांदनी
दर्द सहती रही, चुप रही चांदनी
जन्म देती सृष्टि को अनवरत
फिर भी दलिता रही है सदा चांदनी

भोग क्रीड़ा का वो मात्र साधन रही
हो धनी निर्धनी, दर्द सहती रही
तुमने ढाए सितम, अपनी हद से अधिक
फिर भी वह वंश को है चलाती रही

तुमने समझा उसे वस्तु है, पिण्ड है
उसने समझा तुम्हें देवता की तरह
तुम चलाते रहे त्रास के बाण ही
वह सदा प्यार से मुस्कुराती रही

जिसको जाया वही दर्द देता रहा
जिसको पूजा वही दर्द देता रहा
जैसे हो कोई प्रस्तर की वो शिला
इस तरह सिलसिला रोज़ चलता रहा

तुम चढ़ीं बलि यहां धन के लोलुपों पर
तुम सती हो-हो के देवी बनती रहीं
तेरी अस्मत् को लूटा भरी हाट में
तुमको दी व्याधियां अनगिनत राह में

पर हद से परे जब गुज़रने लगे
एक से एक जुल्म उस पर करने लगे
वह महाशक्ति को खुद में संजोने लगी
जुल्म के हाथों को वो मसलने लगी

वो तो फिर प्राण मन में संजो कर्म को
चल पड़ी यंत्रणा पथ समो धर्म को
दिन नहीं दूर जब मास होंगे सुमन
फिर हंसेगी सजेगी वही चांदनी।
दर्द सहती रही चुप रही चांदनी। □

दर्द घनेरा

दूधिया चांदनी का
दर्द है कितना घनेरा
जान पाता गर
इसको सवेरा

कह जिसे जग ने
शबनम था दुलराया
क्या पता था
चांदनी ने रात सारी
कोष आंसू का लुटाया। □

बोध जताकर अपनेपन का

बोध जताकर अपनेपन का
तुम क्यों दूर हुए
प्यासा पांखो, आस तुम्हारी
कब तक और जिए।

सुबह हुई और शाम ढल गई
आई न कोई खबर
नेह नहीं था मुझसे तुमको
फिर क्यों रोकी डगर।

चन्दा रो-रो नीर बहाए
सूरज ढल-ढल पीर जगाए
और हवाएं बीते पल की
यादें बन-बनकर छाएं।

नयनों के चातक हैं हारे
पीव-पीव दिन रैन पुकारे
आस लिए तेरी ओ प्रियतम
कब तक और जिए।
बोध.........

सोना लगे है दिन

सोना लगे है दिन, चांदी लगे है रात
इस ज़िन्दगी ने पाया, जबसे तेरा साथ
मन में खिले हैं फूल, कितने पलाश के
लगता है शेष हो चले, अब दिन तलाश के

आंखों की राह आप, दिल में उतर गए
स्वर्ग से तो कम नहीं, मुझको तेरा साथ
जबसे मिली हैं सुरमई, आंखों की मस्तियां
लिख-लिखकर तेरा नाम मिटाती हथेलियां

अमराइयों में रात, होती है मुलाकात
हर सुबह छेड़ती हैं, हमको सहेलियां
चाहा है तुमको हमने भरपूर चाह से
देती गवाहियां तेरे गालों की सुर्खियां

अधरों पर तेरे अधरों की मीठी-सी वो छुअन
जैसे रेत के शहर पर छाई हों बदलियां
मुझको अकेला छोड़, तू परदेश जा बसा
सपनों के समुद्र में, सुधियों की किश्तियां। □

ज़िन्दगी बन्दगी हो गई

ज़िन्दगी बन्दगी हो गई
गीत थी अब गज़ल हो गई
जब से तुम से मिली ज़िन्दगी
प्यार की एक फसल हो गई।

कितनी कांटों भरी थी चुभन
तुमसे मिलकर सुमन हो गई
तुमसे जब से मिली ज़िन्दगी
गीत महका चमन हो गई।

ज़िन्दगी सादगी हो गई
फूलों की ताज़गी हो गई
तुमने होंठों पर लिखा जो नाम
प्यार की बानगी हो गई।

तुमने तोड़ा जो मेरा भरम
प्रीत और मीत का यह धरम
ज़िन्दगी मरुथल हो जाएगी
फिर न लौटेंगे उसके कदम। □

ज़िन्दगी की राह

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी की राह दे दो।

कलियां न मिलें तो खार ले लो
प्यार दे दो दुलार ले लो
नेह के फूल हरसिंगार दे दो।

नफरतों की वादियों में तुम बढ़े चलो
ज़िन्दगी की आंधियों में तुम डटे रहो
ज़िन्दगी के कांटों को तुम गुलाब दो।

गिर रहा हो कोई उसे बढ़कर थाम लो
हो सके तो ज़िन्दगी को तुम संवार लो
ज़िन्दगी के पतझर को तुम बहार दो।

प्यार के रिश्तों को तुम कुछ भी नाम दो
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी का नव विहान दो
प्यार के बिरवे को हर दिल में सजा लो।

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी की राह दे दो।
कलियां न मिलें तो खार ले लो। □

पांव तले ज़िन्दगी फिसल गई

पांव तले ज़िन्दगी फिसल गई
भोर कब सांझ में बदल गई
देखते रहे हम मौसम की रुसवाई
ठगी रही उम्र और ज़िन्दगी फ़िसल गई।

मोम की धरती, आंच पर पिघल गई
जितना ही बांधा, उतनी ही निकल गई
देखते रहे ऋतुओं की बेवफाई
बरसाती मौसम में ज़िन्दगी फिसल गई।

आग के दरिया में पांव जले बार-बार
सिन्दूरी सपनों के महल जले बार-बार
दुबक रही अन्तर में सोने की हिरनियां
कंचनियां देह कब कांसे में बदल गई।

छलना के मधुबन में छला गया फूल-फूल
फूलों के बिस्तर में छिपे मिले शूल-शूल
हरे-हरे तोतों के पांवों में पैंजनियां
केसर की बगिया में ज़िन्दगी मचल गई। □

ज़िन्दगी

जीत-सी लगी तो कभी हार-सी लगी
अम्ल-सी लगी तो कभी क्षार-सी लगी
इस जिन्दगी के रूप, कितने यहां हैं दोस्त
फूल-सी लगी तो कभी ख़ार-सी लगी।

पतझर लगी कभी, कभी मधुमास-सी लगी
महलों का सुख कभी, वनवास-सी लगी
पढ़ना जो चाहा हमने, इस किताब को
बीती हुई सुधियों की बरसात-सी लगी।

खुशियों भरा गिलास, कभी प्यास-सी लगी
चैन-सी लगी कभी बदहवास-सी लगी
यह क्या हुआ जो ज़िन्दगी हमसे नहीं मिली
मन के मरुस्थल में, जलजात-सी लगी।

छलना लगी कभी, कभी एतबार-सी लगी
नफरत लगी कभी तो कभी प्यार-सी लगी
इस ज़िन्दगी से रूठना जिन्दादिली नहीं
घुटनों के बल गिरे हुए सवार-सी लगी। □

प्यार का गीत

प्यार का गीत हम गुनगुनाने आए हैं
दिल से दिल हम यहां मिलाने आए हैं,
नफरतों की दीवारें गिराने आए हैं
प्यार का एक दीप हम जलाने आए हैं।

कोई हिन्दू नहीं, कोई मुस्लिम नहीं
सिर्फ इन्सां हम याद दिलाने आए हैं,
दुश्मनों की हैं आंखें वतन पर मेरे
दुश्मनों से वतन को बचाने आए हैं।

मेरे गीतों में जो प्यार की गंध है
गन्ध को हम पवन में बसाने आए हैं,
मिल-जुलकर रहें एक बनकर रहें
प्रीति के हमसफर बनाने आए हैं। □

प्रतीक्षा

उनके आने की पल-पल प्रतीक्षा रही
भाल टिकुली सजी, मांग इंगुर भरी
हाथ में कंगनों बीच सजी चूड़ियां
लहंगे पर टंके फिर चांद तारे कई।

चंदनी गंध से मन सुवासित हुआ
देह पूरी की पूरी हुई दर्पनी
हाथ में मेंहदी रंग लाने लगी
और महावर ने आज चुटकी भरी।

मन सजाता रहा स्वप्न फिर नेह के,
बाट तकते रहे दो नयन खंजनी
मन में बजने लगी प्रीति की बांसुरी
लेकर आई सन्देशा पवन चन्दनी।

मांग टीका सजा पांव में छागले
देखा दर्पन तो मन के बढ़े हौसले
शर्म से लाल होने लगी मोहिनी
धानी चूनर बनी वक्ष की ओढ़नी। □

दूसरों के दर्द बांट देखिए

दूसरों के दर्द बांट देखिए
आप भी हमदर्द बन के देखिए
यह जहां तो है गमों के कई शहर
इस शहर में रहकर ज़रा देखिए।

दर्द के रिश्ते सदा होते अमर
है कठिन बहुत मगर इसकी डगर
हौसलों के काफिले हैं मुन्तज़िर
काफिलों की भीड़ में चल देखिए।

लोग अपने ही पिलाते हैं जहर
ज़िन्दगी में वो मिलाते हैं ज़हर
नफरतों का है अजायबघर सजा
आप भी सुकरात बनकर देखिए। □

ग़मों के इस शहर में

ग़मों के इस शहर में
तुम अकेले तो नहीं हो,
खड़े हैं राह में हम भी
हमें भी संग तो ले लो।

यह सच है कि ग़मों के
पत्थर नुकीले हैं
मगर शीशों के घर में
रहने वाले तुम अकेले
भी तो नहीं हो।
ग़मों के इस शहर में—

करीलों के वनों से पूछ लो
वो कैसे जीते हैं,
चन्दनी वन में यहां
विष सर्प पलते हैं
उम्र की लम्बी सड़क पर
तुम अकेले तो नहीं हो।
ग़मों के इस शहर में—

निशा की आंख से पूछो,
बही जो शबनमी बनकर
झरनों की धार से पूछो
बहा जो है नदी बनकर
भरे मधुमास में, पतझर,
अकेले तुम नहीं हो।
ग़मों के इस शहर में—

यातनाओं के समुद्र में
मछेरे भी बहुत हैं
और घनी रातों के पीछे
भी सवेरे तो बहुत हैं
मनस की इस तपन में
तुम अकेले तो नहीं हो।
गमों के इस शहर में—

अगर हो तेज भी आंधी
चरागां गुल नहीं होते
शमा के पास परवानों के
मेले कम नहीं होते,
बना के गम को खुशियां तुम
सजा के गम के गुलदस्ते
खड़े हैं राह में हम भी
हमें भी संग तो ले लो।

गमों के इस शहर में,
तुम अकेले तो नहीं हो
खड़े हैं राह में हम भी
हमें भी संग तो ले लो। □

ढल रही है सांझ

ढल रही है सांझ साथी,
ढल रही है सांझ।

स्वप्न कितने सूनेपन के
बुन रही है सांझ
गीत कितने रीतेपन के
गुन रही है सांझ,
साथी ढल रही है सांझ।

पात झरनों वात में
अब चल रही है सांझ
सांझ के सूने थके पल
बुन रही है सांझ
साथी ढल रही हैं सांझ।

रात के ढलते बदन पर
कालिमा का ये वसन
चुपचाप बुनती जा रही है सांझ
या गगन के वक्ष पर
झिलमिल सितारे टांकती है सांझ,
साथी ढल रही है सांझ। □

घाटियों के बदन

घाटियों के बदन
चूमता है गगन
बर्फ की ओढ़नी
सर पर डाले पवन

झूमती है फिज़ा
हर समा है मगन
साल के वृक्ष पर
प्यार की गन्ध है

झील में अक्स
तेरे नीले नयन
खंजनी आंखों में
हैं सुनहरे सपन

तन में छाई हुई
एक मीठी तपन।
घाटियों के बदन। □

कारे मेघ

देखो घिर आए कारे मेघ।
बरखा की बूंदें बरसीं
प्यासी धरती के श्वासों से
सोंधी बास उठी
देखो घिर आए कारे मेघ।

सावनियां दुलहनियां ओढ़े
हरियाली की चूनर
बरखा की बूंदों की पायल पहने
रतनारे नयनों में, पी की प्रीत लिए
देखो घिर आए कारे मेघ।

सुधियों की झालर में
झांकते अनगिन प्रसून
प्यार भरे सम्बल को ढूंढ़ते, भरमाए
देखो घिर आए कारे मेघ।

सुधियों के झरनों को झरने दो
मत रोको, मत रोको, झरने दो। □

युग पुरुष

युग पुरुष गांधी
शत - शत नमन तुम्हें
अवतरित हुए धरा पर
दूर हो गया तम
धन्य हुई भारत मां
तोड़ दिए बन्धन

सत्य और अहिंसा
दिए जो अमोघ मंत्र
मानवता और प्रेम की
दुन्दुभि वजी स्वतंत्र

दलितों को लगा गले
पाठ यह पढ़ाया
पीड़ित दुखियों का
मर्म भी जनाया

देश धर्म मुख्य है
मर्यादा है माटी की
धर्म, जाति वर्ग भेद
व्यर्थ सारहीन सभी

शक्ति जगा अबला की
बना दिया सबला
राष्ट्रीयता की छटा नई
दीप नया जला

गूंज रहा कण-कण में
यशगान स्वर्णिम
कथा अमर कीर्ति अजर
गाथा है अप्रतिम

हिंसा का तांडव है
भूल गए तुमको
टूक - टूक हो गए
पीड़ा है सबको

तुम्हारी यह जन्मशती
करने आती सचेत
कर्त्तव्य भारत मां के प्रति
भूले नहीं न हो हम अचेत

युग पुरुष गांधी
शत-शत नमन तुम्हें। □

सूरज के घर का अन्धेरा

सूरज के घर में
यह कैसा अन्धेरा है
अपने ही घर में
प्यासा सवेरा है

बगुलों की पातों में
हंसा अकेला है
चन्दन के वृक्षों पर
सर्पों का डेरा है

तारों की झिलमिल में
लुक-छुप सवेरा है
बंसी के छिद्रों में
जीवन का फेरा है। □

चिट्ठियां आने लगी हैं

चिट्ठियां आने लगी हैं अब हमारे गांव से
उसने लिखा है मुझको पुराने नाम से

उसने उकेरा है पुरानी यादों को
जो गुना करते थे, नीम की उस छांव में,

पक गई हैं सुनहरी मोतियों की बालियां
पियरा गई सरसों अब हमारे गांव में

अब नदी पोखर का पानी बढ़ गया है
पावसी ऋतु आ गई है अब हमारे गांव में

आम्र की डालियां सब झुक गई हैं
गुनगुनाते गीत भंवरे अब हमारे गांव में

खेलते हैं जब मुंडेरों पर कपोतों के युगल
मन खिड़कियों के कांच टूटे तब हमारे गांव में

मेले में कल सांझ तेरी याद हमको आ गई
मैं लिपटती ही गई पगडंडियों के पांव से

चिट्ठियां आने लगी हैं अब हमारे गांव से
उसने लिखा है मुझको पुराने नाम से □

अर्चना के फूल हो

तुम हमारी अर्चना के फूल हो
तुम हमारी कल्पना के फूल हो
मार्ग जीवन का जितना कठिन हो
तुम सदा हिम सा बनाते आए हो
वेदना के अंधेरों में सदा
दीप आशा का जलाते आए हो

तुम प्रकाशित छन्द से
तुम सुवासित गन्ध से
तुम रुपहली चांदनी से
बस गए हो प्राण की
एक एक कनी में
तुम हमारी अर्चना के फूल हो □

बासन्ती धूप

बासन्ती धूप खिली घर आंगन
चहक उठी देहरी हर कानन
कलियों में गूंज उठा वृन्दावन
गलियों में धूम मची मनभावन

फगुनहठी झूम उठी दुपहरिया
रसवन्ती सांझ बनी माधुरिया
पनघट पर गूंज उठी बांसुरिया
कूक उठी उमराई कोयलिया

सरसों के खेतों में पायल की रुनझुन
फूलों पर मदमाते भौरों की गुनगुन
ऐसे इस मदमाते मधुमासी मौसम में
आओ बतिआएं कुछ मन की, गलियारे में □

बारूद के सैलाब

बारूद के सैलाब में
डूबा है यह शहर
बस्ती में लगी आग
और जंगल भी ज़ल गया।

डर डर के अब तो
होती है सांझ और सहर
यह किसकी फितरतों से
ये मंजर बदल गया।

स्टेनगनों की मार से
हर गुंचा जल गया
जो बेकसूर थे उन्हें
दरिया निगल गया।

किसपर करें एतबार
अब किसको कहें अपना
अपना ही कोई पल पल
हमको है छल गया।

ऐसी चली हवाएं
विष घोलती हुई
सांसों में अब तो, जहर का
नश्तर-सा घुल गया। □

वे क्षण

भूलते वे क्षण नहीं
तुम्हारे साथ के
टूटते वे पल
तुम्हारे आस के

स्नेह की चादर सुहानी
रात की बढ़ती रवानी
नेह की दुखती रगों को
चाहता है कौन छूना

मोड़ पर हर राह पर
मिलते रहे तुम देखकर भी
अजनबी सा रुख तुम्हारा
स्नेह की अंजुरी भर धूप में कब?
सेंक पाया, आस्था का शीत कोई?

गा सकेंगे क्या स्वर तुम्हारे मीत बनकर ?
नेह का क्या दीप कोई जल सकेगा?
मीत मेरे रीति बनकर पल सकेगा
तम खिला है मन ढका है
पाट पाया है क्या कभी कोई?

रीति के बढ़ते कुहासे
लुटा रही चांदनी वयं को
छा रहा अमृत धरा पर

कोई बटोरेगा?
कर थाम लोगे?
अश्रु दर्पण में छवि,
हमारी बांध लोगे? □

मुक्ति बोध

नहीं जानता था
तुम्हारी कंचन-सी काया
वह संगमरमरी देह
किसी हंस के धवल पंखों सी
जिसे तुम इन्द्रधनुषि परिधान से
सजाया करती थीं
कुछ इस तरह
राख की ढेर हो
गंगा की गोद में
समा जाएगी
तुम्हारी चिता से उठती
लपटों की तपन
अभी तक मेरे
जिस्म को है झुलसाती
अंगारों में तपती
जीवन के संगीन थपेड़ों से लड़ती
मुक्तिबोध की आतुर
कितनी पा सकी
कोई शान्ति स्रोत □

आदमी

चांद तक पहुंचा हुआ है आदमी
खुद से ही कितना जुदा है आदमी

दूरियां बढ़ती गई, गहरा गईं तनहाइयां
छल रही है खुद ही को, खुद की ही परछाइयां
कौन पाटेगा यहां अब दिल की ये खाइयां

अपने ही घर में लगाता आग क्यूं है आदमी
अपनों के खूं से हैं रंगी सड़कें, गलियां, घाटियां
अब तो खुद का भी नहीं एतबार करता आदमी

एक दूजे के लिए कांटे बिछाता आदमी
क्यूं मनुजता के सबक को भूलता है आदमी
आदमी से प्यार क्यूं करता नहीं है आदमी □

भोर का सूरज

भोर का सूरज क्षितिज पर है चमकता
फिर धरा के गेह में है क्यूं अन्धेरा
द्रौपदी का चीर हरता है दुशासन
भूलता जा रहा मनु भी आज अनुशासन

राम की नगरी बनी रण क्षेत्र है
भाई भी भाई से करता भेद है
जल रही हैं हर तरफ नफरतों की होलियां
भूलते हम जा रहे क्यूं प्यार की अब बोलियां □

ज्योति बनकर

मन तिमिर में ज्योति बनकर, छा गया है
आज कोई।

तृप्ति बन नेपथ्य पर अब आ गया है,
आज कोई।

जब कुहासा धुन रही थीं, दिश दिशाएं
चंद्रिका की ज्योति बनकर छा गया है
आज कोई।

जब हवाएं बुन रही थीं रेत के टीले
सुरभि के चन्दन पवन सा छा गया है
आज कोई।

दर्पणी सी लग रही हैं अब व्यथाएं
इन्द्रधनुषी आरती का थाल लेकर आ गया है
आज कोई।

आस्था के पुष्प रोपित हो चले अब
गगन बनकर मन पटल पर छा गया है
आज कोई।

पावड़े हमने बिछाए हैं पलकों के
रेशमी अभिसार बनकर आ गया है
आज कोई। □

पावस के आने से

पावस के आने से बादल घिर आते हैं,
दु:ख के गहराने से झरने झर जाते हैं।
ऋतुओं के झूले में झूल रहे हम तुम
मौसम के जाने से गीत चले जाते हैं।।

सागर की लहरों पर सिन्दूरी चादर है,
पनघट पर रीता, रीता मन गागर है।
उम्र छली जाती है मौसम के हाथों,
लुटता देहरी देहरी, यौवन का दादुर है।।

मावस की रातों में तारों के दीपों में,
तार तार होता है आंचल अब गीतों में।
सन्देहों के बादल अब घिरते हैं पल पल
रेतीले मोती अब बन्द हुए सीपों में।।

झीलें पथराई हैं, अमराई सूनी है
कलियां भी गलियां भी फीकी हैं सूनी हैं।
सागर तट रेतों के टीलों से लगते हैं
दर्दीली नदिया की गाथा अब दूनी है।।

जीवन जी लेने का गौरव कब पाते हैं,
पथराए नयनों में बिम्ब झिलमिलाते है।
दर्पण के आंगन, पाहन के पंथ बिछे,
मृतकों के चेहरे आपस में बतियाते हैं।। □

मन

मन क्यों ?

बोझ से लदा
ढोता है उम्र का
भद्दा लम्बा लबादा
खुरदुरे हाथों से
पावों को टटोलता।

मन क्यों ?

गुलदाउदी के फूलों में,
छुप जाने को आतुर
बहका बहका
ताकता पास के
पलाश के रंग को।

मन,क्यों ?

छला गया
दर्पण के आरपार
छूकर, छिपकर
अपनी बाहों में भींचता
आकाश का कोना कोना
तारों की झुरमुट में,
तलाशता एक तारा।

मन क्यों ?

कुहासों के जंगल में
दिनकर की सफेद किरन
आंचल पसारे

बीतता सारी उम्र
रजनीगंधा की महक
मखमली दुशालों में,
कुनमुनाती धूप को
समेटता कृपण सा।

मन क्यों ?

कस्तूरी गंध के पीछे,
भागता, बन्जारे सा,
पड़ाव, पड़ाव, नियति गति
भूख रोटी, तलाशता
समय के हाथों,
लुट जाता। □

• • •